दीपदान

जीवन परिचय :

डॉ. रामकुमार वर्मा

आधुनिक हिन्दी एकांकीकारों में वर्मा जी का उल्लेखनीय स्थान है। उनका रचना काल छायावाद युग के अन्तिम चरण से प्रारम्भ होता है। डॉ0 वर्मा का जन्म 15 नवम्बर सन 1905 को मध्यप्रदेश के सागर जिले में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा सागर में और उच्च शिक्षा प्रयाग विश्व विद्यालय में हुई। हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास नामक इनकी कृति पर नागपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें पी-एच0डी0 की उपाधि प्रदान की। वर्मा जी प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष भी रहे। सन 1963 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया। वर्मा जी की प्रतिभा बहुमुखी है और उन्होंने कविता, नाटक, निबंध, आलोचना आदि विविध क्षेत्रों में रचनाएँ की हैं। वह हिन्दी में एकांकी कला के जन्म दाता भी कहे जाते हैं। उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं - काव्य : वीर हम्मीर, कुल ललना, चित्तौड़ की चिता, रूपराशि, निशीथ, चितवन, अभिशाप, चित्ररेखा, चन्द्रकिरण, जौहर एकलव्य (महाकाव्य) आदि। नाटक- सत्य का स्वप्न, विजय पर्व एकांकी संग्रह- पृथ्वीराज की आँखे, चारुमित्रा, रेशमीटाई, सप्त किरण, कौमुदी महोत्सव, दीपदान आदि। निबन्ध और आलोचना- विचार दर्शन, साहित्यशास्त्र, कबीर का रहस्यवाद, समालोचना, हिन्दी साहित्य का इतिहास आदि।

डॉ0 वर्मा नाटक के कथानक प्रायः इतिहास और आधुनिक समाज से लेते थे। वे मूलतः कवि थे इसलिए आपके एकांकियों में कवित्व की झलक दिखाई पड़ती है। स्थान-स्थान पर आपकी भाषा में मार्मिक व्यंग्य की योजना भी मिलती है। आप हिन्दी के छायावादी काव्यधारा के प्रसिद्ध कवि, नाटककार और आलोचक हैं। आपने सामाजिक, पौराणिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और ऐतिहासिक सभी प्रकार के एकांकी लिखे हैं। आपकी एकांकी में कल्पना का समन्वय होने के बावजूद उसके मूल स्वरूप में कोई बदलाव नहीं आया है और मानवीय संवेदनाओं का सही निरूपण है। वस्तुतः आपकी भाषा में भावों तथा विचारों को अभिव्यक्ति करने की अनोखी क्षमता है। प्रसंग तथा भाव के अनुसार रूप बदलता रहता है। डॉ0 रामकुमार वर्मा बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार हैं। उन्होंने कविता के साथ ही गद्य की अनेक विधाओं में अपनी कलम चलाई है। उनका हिन्दी साहित्य में अप्रतिम स्थान है।

प्रस्तुत एकांकी में डॉ. वर्मा ने पन्ना धाय के बलिदान को चित्रित किया है। यह एकांकी एक ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। महाराणा साँगा के निधन के बाद उनके पुत्र कुँवर उदय सिंह ही चित्तौड़गढ़ के राज्य सिंहासन के उत्तराधिकारी थे, किंतु स्वर्गीय महाराणा साँगा के भाई पृथ्वीराज का दासी पुत्र बनवीर षड्यंत्रपूर्वक यह राज्य सिंहासन हथियाना चाहता था। वह एक रात्रि में दीपदान के आयोजन के बहाने नृत्य का आयोजन कराता है। इस नृत्य में वह प्रजा-जनों को व्यस्त रखकर कुँवर उदयसिंह की हत्या की योजना बनाता है। कुँवर उदयसिंह का लालन-पालन पन्ना धाय के जिम्मे था। पन्ना धाय का भी चंदन नामक एक पुत्र था। पन्ना धाय कुँवर उदयसिंह की रक्षा में सदैव सन्नद्ध रहती थी। जब उसे ज्ञात हुआ कि बनवीर कुँवर की हत्या करने के लिए भवन में आ रहा है तब वह चतुराई पूर्वक कुँवर को राजभवन के बाहर भेज देती है। उनकी शैय्या पर अपने पुत्र चंदन को सुला देती है। बनवीर तलवार लिये कुँवर को मारने आता है। पन्नाधाय अपने सोते हुए पुत्र की पहचान छिपा लेती है और बनवीर उसे कुँवर उदयसिंह समझकर उसकी हत्या कर देता है। यह सब पन्नाधाय की आँखों के सामने घटित हुआ, वह अपने पुत्र का बलिदान करके चित्तौड़ के उत्तराधिकारी कुँवर उदयसिंह की रक्षा कर लेती है।

नाटक में पन्ना धाय का चरित्र अपने त्याग और बलिदान के कारण चिरस्मरणीय बन गया है। नाटककार ने इस चरित्र को अपने इस एकांकी का केन्द्रीय चरित्र बनाकर पन्ना धाय के त्याग को राष्ट्रहित की भावना से जोड़कर प्रभावशाली बना दिया है। पन्ना धाय के इस बलिदान से यह प्रकट होता है कि व्यक्तिगत हित से राष्ट्रहित बड़ा है। पन्ना धाय जब अपने पुत्र चंदन की आसन्न हत्या का अनुभव करती है, तब एकांकीकार एक माँ के हृदय में उठने वाले उद्वेलनों का भावनात्मक चित्रण करते हैं। एक तरफ उसके भीतर मातृत्व की भावना जागृत होती है तो दूसरी ओर वह कुँवर की

रक्षा करने जैसे राष्ट्रीय दायित्व बोध से परिचालित है। अंततः वह अपने पुत्र का बलिदान कर देती है।राष्ट्र रक्षा के लिए सर्वस्व त्यागने का प्रेरणा भाव ही एकांकी का मुख्य लक्ष्य है।

इस एकांकी में पन्ना धाय के बलिदान को चित्रित किया गया है। कर्त्तव्य की बलिवेदी पर वह अपने एकमात्र पुत्र को सहर्ष न्यौछावर कर देती है। एकांकीकार ने पन्ना के चरित्र के माध्यम से यह व्यक्त किया है कि राष्ट्रहित के लिए व्यक्तिगत हित का त्याग करना पड़ता है। दीपदान एकांकी की कथावस्तु चित्तौड़ राज्य के महाराणा साँगा के छोटे पुत्र कुँवर उदयसिंह पर केन्द्रित एक ऐतिहासिक घटना पर आधारित है।

पात्र-परिचय

कुँवर उदयसिंह – चित्तौड़ के स्वर्गीय महाराणा साँगा का सबसे छोटा पुत्र। राज्य का उत्तराधिकारी। आयु 14 वर्ष

चंदन – धाय माँ पन्ना का पुत्र। आयु 13 वर्ष।

बनवीर – महाराणा सांगा के भाई पृथ्वीराज का दासी पुत्र। आयु 32 वर्ष।

कीरत – जूठी पत्तल उठाने वाला बारी। आयु 40 वर्ष।

पन्ना – कुंवर उदयसिंह का संरक्षण करने वाली धाय। चंदन की माँ, आयु 30 वर्ष।

सोना – रावल रूपसिंह की अत्यंत रूपवती लड़की। कुंअर उदयसिंह के साथ खेलने वाली। आयु 16 वर्ष।

सामली – अंतः पुर की परिचारिका। आयु 28 वर्ष।

काल – सन् 1536

समय – रात्रि का दूसरा पहर।

स्थान – कुँअर उदयसिंह का कक्ष, चित्तौड़।

(कक्ष में पूरी सजावट है दरवाजों पर रेशमी पर्दे हैं। पास मे उदयसिंह की शैय्या है। सिरहाने पन्ना के बैठने का स्थान है।)

(नेपथ्य में नारियों की सम्मिलित नृत्य ध्वनि और गान धीरे धीरे हल्का होता जा रहा है।)

उदयसिंह : (दौड़ता हुआ आता है, पुकारता है) धाय माँ, धाय माँ!

पन्ना : (भीतर से आती हुई) क्या है कुँअर (देखकर) अरे रात हो गई और तुमने अभी तक तलवार म्यान में नही ंरखी ?

उदयसिंह : धाय माँ, देखो न कितनी सुंदर-सुंदर लड़कियाँ नाच रही हैं। गीत गाती हुई तुलजा भवानी के सामने नाच रही हैं। चलो देखो न।

पन्ना : मैं नहीं देख सकूँगी लाल।

उदयसिंह : नहीं धाय माँ थोड़ी देर के लिए चलो न।

पन्ना : नहीं कुँअर मुझे नाच देखना अच्छा नहीं लगता।

उदयसिंह : क्यों नहीं अच्छा लगता ? मैं तो नाचने वाली लड़कियों को बड़ी देर तक देखता रहा और वे भी तो मुझे बड़ी देर तक देखती रहीं, मैं कितना अच्छा हूँ।

पन्ना : बहुत अच्छे हो। तुम तो चित्तौड़ के सूरज हो। महाराज साँगा के छोटे कुँअर। सूरज की तरह तुम्हारा उदय हुआ है। तभी तो तुम्हारा नाम कुँअर उदय सिंह रखा गया ।

उदयसिंह : (हँसकर) अच्छा यह बात है पर क्या रात में भी सूरज उदय होता है? मैं तो रात में भी हँसता -खेलता रहता हूँ।

पन्ना : दिन में तो तुम चित्तौड़ के सूरज हो कुँवर और रात में तुम राजवंश के दीपक हो। महाराणा सांगा के कुल दीपक।

उदयसिंह : कुल दीपक। कहीं तुम मुझे दान न कर देना, धाय माँ, वे नाचने वाली लड़कियाँ तुलजा भवानी की पूजा में दीपदान करके ही नाच रही हैं। वे दीपक छोटे-से कुंड में कैसे नाचते है ? (मचलते हुए स्वर में) चलो न धाय माँ । तुम उनका दीपदान देख लो। जिस तरह उनके दीपक नाचते हैं, उसी तरह वे भी नाच रही हैं ।

पन्ना : मैं इस तरह कुछ नहीं देखूँगी कुँअर।

उदयसिंह : (रूठकर) तो जाओ मैं भी नहीं देखूँगा। में उदय सिंह भी नहीं बनूँगा और कुल -दीपक भी नहीं। कुछ नहीं बनूँगा ।

पन्ना : रूठ गए कुँअर, रूठने से राजवंश नहीं चलते । देखो तुम्हारे कपड़ों पर धूल छा रही है। दिन भर तुम तलवार से खेल खेलते रहे, थक गए होगे, जाओ सो जाओ। मैं तुम्हारी तलवार अलग रख दूँगी।

उदयसिंह : (रूठे हुए स्वर में) मैं तलवार के साथ ही सो जाऊँगा।

पन्ना : अभी वह समय नहीं आया कुँवर। चित्तौड़ की रक्षा में तुम्हें तलवार के साथ ही सोना पड़ेगा।

उदय सिंह : (रूठे स्वर में) तुम्हें तलवार से डर लगता है?

पन्ना : तलवार से डर। चित्तौड़ में तलवार से कोई नहीं डरता कुँअर जैसे लता में फूल खिलते हैं वैसे ही वीरों के हाथ में तलवार खिलती है।

उदयसिंह : (रूठे स्वर में) अब मेरा मन बहलाने लगी। तुम नाच देखने नहीं चलती तो मै अकेला चला जाऊँगा। मैं जाता हूँ। (जाने को उद्यत हैं।)

पन्ना : नहीं कुँअर । तुम कभी रात में अकेले नहीं जाओगे। चारों तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं। किसी समय भी तुम्हें डस सकते हैं।

उदयसिंह : सर्प! कैसे सर्प ?

पन्ना : तुम नहीं समझोगे, कुँअर! जाकर सो जाओ। थक गए होगे। भोजन के लिए मैं जगा लूँगी।

उदयसिंह : नहीं माँ! आज न मैं भोजन करूँगा और न अपनी शय्या पर ही सोऊँगा (प्रस्थान के लिए उतरता है।)

पन्ना : चले गए, कुँअर का रूठना भी मुझे अच्छा लगता है। मना लूँगी। नाच, गाना, दीपदान-इसी से चित्तौड़ की रक्षा होगी ? चित्तौड़ में यह बहुत हो चुका। बहुत हो चुका और अब तो बनवीर का राज्य है।

(नूपुर नाद करते हुए एक किशोरी का प्रवेश)

सोना : धाय माँ को प्रणाम ।

पन्ना : कौन ?

सोना : मैं हूँ सोना । रावल रूप सिंह की लड़की । कुँअर जी कहाँ हैं ?

पन्ना : वे थक गए हैं। सोना चाहते हैं।

सोना : सोना चाहते हैं। तो मैं भी तो सोना हूँ। (अट्टहास)

पन्ना : चुप रह सोना। कुँअर जी रूठकर चले गए हैं। तुम लोग कुँअर जी को नाच–गाने की और खींचना चाहती हो।

सोना : क्या तुलजा भवानी के सामने नाचना कोई बुरी बात है? आज हम लोगों ने दीपदान किया और मन भर कर नाचा (नाचती है) कुँअर जी भी तो बड़ी देर तक हमारा नाच देखते रहे । मैं उनको देखकर बहुत नाची । उनको हमारा नाच बहुत अच्छा लगा। देखो पैरों की यह ताल । (नुपूर की झनकार)

पन्ना : बस, बस सोना! अगर तू रावल जी की लड़की न होती तो ....

सोना : कटार भौंक देती कटार (अट्टहास करती है) धाय माँ, तुमने उदयसिंह के सामने तो पुत्र चंदन को भी भुला दिया।

पन्ना : रहने दे, जानती नहीं बनवीर का राज्य है।

सोना : ओहो बनवीर! उन्हें श्री महाराणा बनवीर कहो । हमारे लिए वे एक रेशम की झूल लाए थे। उसे सिर से ओढ़कर नाचने से ऐसा लगता था, जैसे मकड़ी के जाल के आस–पास चंद्रमा की किरणें थिरक रही हैं। हाँ

पन्ना : बहुत नाचती हो! बनवीर की तुम पर बड़ी कृपा है।

सोना : द्रोपदी के चीर की तरह । आज प्रातः काल उन्होंने मुझे बुलाया और कहा धाय माँ तुम बुरा तो नहीं मानोगी ?

पन्ना : मैं क्यों बुरा मानूँगी ?

सोना : उन्होंने कहा महल में धाय माँ अरावली पहाड़ बनकर बैठ गई। अरावली पहाड़ (हँसती हैं) तो तुम लोग बनास नदी बनकर बहो, व खूब नाचो, गाओ। यों आज कोई उत्सव का दिन नहीं था फिर भी उन्होंने कहा मेरे बनाये हुए मयूर पंख कुंड में दीपदान करो । मालूम हुआ जैसे मेघ पानी – पानी हो गए हो और बिजलियाँ टुकड़े –टुकड़े हो गई हो।

पन्ना : बड़ी उमंग में हो आज।

सोना : दीपकों के साथ उमंगे भी लौ देने लगी हैं , धाय माँ! सारा जीवन ही एक दीपावली का त्यौहार बन गया है।

पन्ना : तो यही त्योहार मना रही हो तुम ?

सोना : मैं ही क्या सारे नगर–निवासी यह त्योहार मना रहे हैं। नहीं मना रही हो तो तुम। धाय माँ तुम्हारे पहाड़ बनने से क्या होगा ? राजमहल का बोझ बनकर रह जाओगी, बोझ और नदी बनो तो तुम्हारा बहता हुआ बोझ पत्थर भी अपने सिर पर धारण करेंगे। आनंद और मंगल तुम्हारे किनारे होंगे, जीवन का प्रवाह होगा, उमंगों की लहरें होंगी जो उठने में गीत गाएँगी, गिरने से नाच नाचेंगी।

पन्ना : बनवीर के अनुग्रह ने तुम्हें पागल बना दिया है, सोना।

सोना : धाय माँ पागल कौन नहीं ? महाराणा विक्रमादित्य अपने सात हजार पहलवानों के साथ पागल है। मल्ल क्रीड़ा ही तो उनका पागलपन है। महाराजा बनवीर महाराणा विक्रमादित्य की आत्मीयता से पागल हैं। सारा नगर आज के त्योहार में पागल है। तुम कुँअर उदयसिंह के स्नेह में पागल हो और मैं

(हँसकर) मेरी कुछ न पूछो, धाय माँ । मैं तो इन सबके पागलपन में पागल हूँ। तुम चाहे जो कहो। हाँ, तो कुँअर उदयसिंह कहाँ हैं?

पन्ना : कुँअर उदय सिंह को छोड़ो, सोना! वे बहुत थक गए हैं। अब सो रहे होंगे। तुम जाओ। यहाँ कहीं तुम्हारा पागलपन कम न हो जाए।

सोना : मेरा पागलपन ? धाय माँ पागलपन कहीं कम होता है? पहाड़ चढ़कर कभी छोटे हुए हैं ? नदियाँ आगे बढ़कर कभी लौटी है? फूल खिलने के बाद कभी कली बने हैं ? सब आगे बढ़ते हैं। नहीं बढ़ती तो सिर्फ तुम । सदा एक सी।

पन्ना : सोना मुझे किसी से ईर्ष्या नहीं है। मैं जैसी हूँ अच्छी हूँ। राज-सेवा में जीवन जा रहा है- यही मेरे भाग्य की बात है।

सोना : भाग्य। भाग्य तो सबका होता है धाय माँ। ये नूपुर मेरे पैरों में पड़े हैं तो इनका भाग्य है। मेरे पैरों की गति में गीत गाते हैं, तो इनका भाग्य और जब मेरे पैर रुक जाते हैं तो मौन हो जाते हैं वह भी इनका भाग्य है। भाग्य तो सबके साथ होता है, धाय माँ तुम नगर के उत्सव में भाग नहीं ले रही हो, न लो महाराज बनवीर का साथ नहीं दे रही हो, न दो। मैं कौन होती हूँ बीच में बोलने वाली ?

पन्ना : तो क्या मेरे उत्सव में जाने और न जाने का संबंध बनवीर की इच्छा से है?

सोना : कुँअर को ही भेज देती।

पन्ना : कैसे भेज देती ? इतने आदमियों के बीच उसे कैसे भेज देती ? महाराणा सांगा के वंश के एक वही तो उजाले हैं। महाराजा रतनसिंह तीन ही वर्ष राज करके सूर्य लोक चले गए। विक्रमादित्य भी बनवीर की कूटनीति से अधिक दिनों तक...

सोना : धाय माँ, तुम विद्रोह की बात करती हो।

पन्ना : आँधी में आग की लपटें तेज होती हैं। सोना तुम भी उसी आँधी में लड़खड़ाकर गिरोगी। तुम्हारे ये सारे नुपूर बिखर जायेंगे। न जाने किस हवा का झौंका तुम्हारे गीतों की लहर को निगल जाएगा। चित्तौड़ राग-रंग की भूमि नहीं है जौहर की भूमि है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसे रावल लड़कियाँ नहीं।

सोना : (क्रोध में चीखकर) धाय माँ!

पन्ना : तोड़ो ये नुपूर यहाँ का त्यौहार आत्म-बलिदान है। यहाँ का गीत मातृ भूमि की वंदना का गीत है। उसे सुनो और समझो ।

सोना : (शांत स्वर में) समझ लिया, धाय माँ।

पन्ना : तो यहाँ से जाओ (सोना का धीरे-धीरे प्रस्थान उसके नुपूर धीरे-धीरे बजते हुए दूर तक सुनाई पड़ते हैं।)

पन्ना : अंधेरी रात यह नाच रंग नगर के सब लोगों का जमाव कुँअर उदयसिंह के लिए बुलावा यह सब क्या है? (चंदन का प्रवेश)

चंदन : (दूर से पुकारते हुए) माँ। माँ।

पन्ना : क्या, मेरे लाल ?

चंदन : कुँअर कहाँ है माँ।

पन्ना : रूठकर सो गए हैं।

चंदन : उन्होंने भोजन कर लिया?

पन्ना : नहीं। तुम भोजन कर लो। मैं थोड़ी देर बाद उन्हें उठाकर बहलाकर भोजन करा दूँगी।

चंदन : मुझे भोजन अकेले करना अच्छा न लगेगा माँ।

पन्ना : भोजन कर लो मेरे चंदन! मेरे लाल! सज्जा ने तुम्हारे लिए अच्छा भोजन बनाया है। तुम्हें अच्छी-अच्छी बात सुनाती हुई भोजन करा देगी। मैं भी अभी आती हूँ। तुम्हारी माला टूट गई थी उसी को ठीक कर रही हूँ। बस थोड़े से दानें और रह गए हैं।

चंदन : माँ, कल कुँअर की माला भी ठीक कर देना वह भी टूट रही है। सोना ने पकड़कर खींच दी थी।

पन्ना : अच्छा चंदन। वह भी ठीक कर दूँगी। (एकाएक घर की कुछ चीजों के गिरने की धमक! शीघ्रता से सामली का प्रवेश)

सामली : (चीखकर पुकारती हुई) धाय माँ, धाय माँ!

पन्ना : कौन, कौन सामली ? (चंदन का प्रस्थान)

सामली : (बिलखते हुए) धाय माँ धाय माँ, कुँअर कहाँ हैं? कुँअर कहाँ हैं ?

पन्ना : क्यों, कुँअर जी को क्या हुआ ?

सामली : उनका जीवन खतरे में है।

पन्ना : कहाँ? कैसे? यह तुम क्या कह रही हो?

सामली : उनका जीवन बचाओ धाय माँ ।

पन्ना : (चीखकर) सामली कहाँ हैं कुँअरजी । (अंदर की तरफ भागती है।)

सामली : (बिलखते हुए) हाय सर्वनाश हो रहा है। क्या मेवाड़ को ऐसे ही दिन देखने थे? हाय क्या हो रहा है। तुलजा भवानी तुम चित्तौड़ की देवी हो। कैसे कहूँ तुम्हारे त्रिशूल में अब शक्ति नहीं रही मेवाड़ का भाग्य ...

पन्ना : (फिर प्रवेश कर) सो रहा है। मेरा कुँअर सो रहा है। कहीं तो कुछ नहीं हुआ। कुँअर जी रूठ गए थे, तलवार लिए भूमि पर ही सो गए। तलवार उनके हाथ से खिसक गई है पर वे शांति से सो रहे हैं। मेरे कुँअर को कुछ नहीं हुआ।

सामली : कुँअर अच्छे हैं। तुलजा भवानी कुशल करे। पर धाय माँ। महाराणा विक्रमादित्य जी की हत्या हो गई।

पन्ना : (चीखकर) महाराणा की हत्या हो गई ? किसने की ?

सामली : बनवीर ने, महाराणा सो रहे थे। उसने अवसर पाकर उनकी छाती में तलवार भौंक दी।

पन्ना : (चीखकर) हाय। महाराणा विक्रमादित्य जी!

सामली : बनवीर ने नगर में नाच-गान का त्योहार मनवाया, जिससे नगरवासियों का ध्यान नाच-रंग में ही रहे। मौका देखकर वह राजमहल गया। अंत:पुर में वह आता जाता था। किसी ने रोका नहीं। उसने महाराणा

के कमरे में जाकर उनकी हत्या कर दी। (सिसकियाँ लेने लगती हैं।)

पन्ना : (स्थिर होकर) आज कुसमय नाच-रंग की बात सुनकर मेरे मन में शंका हुई थी। इसलिए मैने कुँअर को वहाँ जाने से रोक दिया था। संभव था कि कुँअर वहाँ जाते तो बनवीर अपने सहायकों से कोई कांड रचा देता ।

सामली : इसीलिए में दौड़ी आई हूँ धाय माँ। लोगों ने बनवीर को कहते सुना है कि वह कुँअर को भी सिंहासन का अधिकारी समझकर जीवित नहीं रहने देगा। वह निष्कंटक राज करेगा धाय माँ!

पन्ना : विलासी और अत्याचारी राजा कभी निष्कंटक राज्य नहीं कर सकता।

सामली : लेकिन रक्त से भीगी तलवार लेकर वह सीना ताने हुए अपने महल में गया है।

पन्ना : लोगो ने उसे पकड़ा नहीं ? सैनिक चुपचाप देखते ही रहे?

सामली : सैनिकों को उसने अपनी तरफ मिला लिया है। लोग उससे डरते हैं। महाराणा विक्रमादित्य का राज्य भी तो ऐसा नहीं था कि लोग उनसे प्रेम रखते। उनके पहलवानों की सहायता से राज्य नहीं चल सकता। सभी सामंत महाराणा से असंतुष्ट थे।

पन्ना : अब क्या होगा?

सामली : थोड़ी देर बाद ही कुँअर जी को मारने आएगा। आज की रात बहुत अँधेरी है। आज की रात में ही अपने को पूरा महाराणा बना लेना चाहते हैं। किसी तरह से भी कुँअर जी की रक्षा होनी चाहिए, धाय माँ!

पन्ना : कुँअर जी की रक्षा (खींचते हुए) कुँअर जी की रक्षा अवश्य होगी। अब मेवाड़ का उत्तराधिकारी एक यही तो राजपूत रक्त है। दासी पुत्र बनवीर को चित्तौड़ सहन नहीं कर सकेगा।

सामली : यह तो आगे की बात है, पर कुँअर जी की रक्षा किस तरह करोगी ?

पन्ना : मैं ? मैं इस अँधेरी रात में ही उसे लेकर कुँभलगढ़ भाग जाऊँगी।

सामली : और चंदन कहाँ रहेगा ?

पन्ना : जहाँ भगवती तुलजा उसे रखेगी। मेरे महाराणा का नमक मेरे रक्त से भी महान है। नमक से रक्त बनता है, रक्त से नमक नहीं।

सामली : धन्य हो, धाय माँ। पर तुम नहीं भाग सकोगी। तुम महलों से निकल भी न सकोगी। आते समय मैने देखा था कि बनवीर के सैनिक तुम्हारा महल घेरने आ रहे थे। एक ओर से तुम्हारा महल घिर ही चुका था।

पन्ना : हाय भगवान एकलिंग! अब क्या होगा ?

सामली : जैसे भी हो कुँअर जी की रक्षा तुम्हें ही करनी है।

पन्ना : मुझे सैनिक की सहायता नहीं मिल सकती।

सामली : सैनिक तो उसके हैं, धाय माँ।

पन्ना : और सामंत?

सामली : उनमें इतना साहस नहीं है।

पन्ना : (जोर से) दरवाजे पर कौन है?

कीरत : अन्नदाता ? कीरत बारी हो । धाय माँ के चरण लागौ।

पन्ना : कीरत तुम हो? बाहर तो कोई नहीं है? (कीरत बारी का प्रवेश)

कीरत : अन्नदाता । बाहर सिपाहियों का डेरा लग रहा है। जान नहीं पड़ता अन्नदाता के आधी रात को जे का हो रहा है। पैड़े में किसी का भी पैसारा नहीं हो पाता। मैं तो बारी हों इससें कोई कुछ बोला नहीं।

पन्ना : तो तुम बेखटके चले आए।

कीरत : अन्नदाता मैं जूठी पत्तल उठाता हूँ। कोई मालपत्ता तो मेरे पास नहीं। टोकरी है और उसमें पत्ते हैं। कुँअर जी ने ब्यालू कर ली धाय माँ? मैं जूठन उठा लूँ ?

पन्ना : नहीं ?

कीरत : कुँअर जी जुग-जुग जिएँ धाय माँ। जब से कुँअर जू बूँदी से आए तब से सगरे महल में उजियारा फैल गया है। राजा विक्रमादित्य जब हरभजन करेंगे तो धाय माँ वे अपना चौर छप्पर कुँअरजी को ही तो सौपेंगे। सच जानो धाय माँ । मैं तो उनके लिए अपनी जान तक हाजिर कर सकता हूँ। (उठकर) धाय माँ कुछ सोच रही है?

पन्ना : (चौंककर) ऐं ! हाँ मैं सोच रही हूँ (सामली से) तुम बाहर जाकर देखो सिपाही कहाँ-कहाँ खड़े हैं और कितने सिपाही हैं ?

सामली : बहुत अच्छा धाय माँ! मैं जाती हूँ (प्रस्थान)

पन्ना : तो कीरत तुम कुँअर जी को बहुत प्यार करते हो ?

कीरत : अन्नदाता। प्यार कहने में जबान पर कैसे आए ? वो तो दिल की बात है। मौके पै ही देखा जाता है और कहने को तो मैं कह चुका हूँ कि उनके लिए अपनी जान तक हाजिर कर सकता हूँ।

पन्ना : तो यह मौका आ गया है कीरत ।

कीरत : मौका ? कैसा मौका?

पन्ना : कुँअर जी को बचाने का ।

कीरत : कौन के सिर पर भैरू बाबा की आँख चढ़ी है जो कुँअर जी का बाल भी बाँका कर सके? और कीरत के रहते धाय माँ, हँसी तो नही ंकर रही हो? अन्नदाता।

पन्ना : नहीं कीरत हँसी का समय नहीं है? कुँअर जी के प्राण संकट में हैं।

कीरत : हुक्म दें अन्नदाता।

पन्ना : अच्छा तो सुनो। तुम बारी हो। तुम्हें बाहर जाने से कोई नहीं रोकेगा। तुम तो टेकरी में जूठी पत्तल उठा के ले जाते ही हो।

कीरत : ठीक कहते हैं अन्नदाता, आते वक्त भी किसी ने नहीं रोका।

पन्ना : तो कुँअर जी को टोकरी में लिटाकर उन पर गीली पत्तलें डालकर महल के बाहर निकल जाओ।

कीरत : वाह! अन्नदाता। यह तो खूब सोचा । मैं ऐसे निकल जाऊँगा कि सिपाही लोग मुँह देखते ही रह जाएँगे । तो कुँअर जी कहाँ है ं?

पन्ना : मेरे कमरे में नीचे सो गए हैं। तुम्हारी टोकरी तो काफी बड़ी है।

कीरत : अन्नदाता आपके जस ने ही तो मेरी टोकरी बड़ी कर दी है। सारे राजमहल की पत्तलें छोटी टोकरी में कैसे आ सकती है, और अन्नदाता आज तो बनवीर के साथ बहुत सामंतों ने खाया है। मैने सोचा आज बड़ी टोकरी ले चलूँ सो वो ही ले आया हूँ।

पन्ना : और हाँ कुँअर जी को लेकर तुम बेरिस नदी के किनारे मिलना वहाँ जहाँ श्मशान है।

कीरत : ठीक है अन्नदाता वहीं मिलूँगा। वहाँ मुझ पे किसी भी आदमी की नजर न पड़ेगी ।

पन्ना : लो जाओ कीरत। आज तुम जैसे छोटे आदमी ने चित्तौड़ के मुकुट को सँभाला है। एक तिनके ने राजसिंहासन को सहारा दिया है। तुम धन्य हो।

कीरत : अन्नदाता ? धन्य तो आप हैं कि मुझको आपने ऐसी सेवा करने का काम सौंपा है। तो मैं चलूँ। (सामली का प्रवेश)

सामली : धाय माँ। महल के चारों तरफ सिपाहियों से घिर गया है। उत्तर की तरफ ही सात सिपाही हैं, बाकी तीनों तरफ बीस-बीस सिपाही पहरा दे रहे हैं। शायद उत्तर की तरफ से सिपाही बनवीर को लेने गए हैं।

पन्ना : कोई चिंता की बात नहीं सामली! तुम यहाँ ठहरना। मैं अभी आती हूँ (कीरत से) चलो कीरत! (तीनों का प्रस्थान)

(पन्ना का प्रवेश)

पन्ना : अब ठीक हैं। कुँअर की रक्षा हो गई।

सामली : पर एक बात, धाय माँ ।

पन्ना : क्या ?

सामली : बनवीर यहाँ जरूर आएगा। वे तुम्हारे महल में कुँअर जी की खोज़ करेंगे । जब वे कुँअर जी को न पाएँगे और तुमसे पूछेंगे तो तुम क्या उत्तर दोगी?

पन्ना : कह दूँगी कि मैं नहीं जानती?

सामली : इससे वे नहीं मानेंगे। आवेश में आकर उन्होंने तुम्हारे ऊपर तलवार चला दी तो! कुँअर जी तुम्हारे कैसे जिएँगे ?

पन्ना : मुझे इसकी चिंता नहीं है सामली ।

सामली : पर चिंता कुँअर जी की है। तुम्हारे बिना वे भी तो जीवित नहीं रहेंगे। फिर तुम्हारा बलिदान चित्तौड़ के किस काम आएगा ?

पन्ना : सचमुच कुँअर जी मेरे बिना नहीं जिएँगे । थोड़ी-सी बात पर तो रूठ जाते हैं। मुझे न पाकर क्या हाल होगा ?

सामली : किस तरह बनवीर को धोखा नहीं दे सकती ?

पन्ना : दे सकती हूँ।

सामली : किस तरह ?

पन्ना : कुँअर जी की शैय्या पर किसी और को सुला दूँगी। वह क्रोध में अंधा रहेगा ही पहचान भी नहीं सकेगा कि यह कौन सोया है?

सामली : तो कुँअर की शैय्या पर किसे सुला दोगी ?

पन्ना : किसे सुला दूँगी? (सोचकर) सामली। मेरे हृदय पर वज्र गिर रहा है। मेरी आँखों में प्रलय के बादल घुमड़ रहा है। मेरे शरीर के एक-एक रोम में बिजली तड़प रही है।

सामली : धाय माँ सँभल जाओ। ऐसी बातें न करो। कुँअर की शैय्या पर ...

पन्ना : सुला दूँगी उसी को। उसी को सुला दूँगी जो मेरी आँखो का तारा है, चंदन। चंदन को सुला दूंगी सामली (सिसकियाँ) चंदन को सुला दूँगी । उस नन्हे से लाल को हत्यारे की तलवार के नीचे रख दूँगी।

सामली : धाय माँ ऐसा मत कहो। ऐसा में नहीं सुन सकूँगी।

(प्रस्थान)

पन्ना : चली गई। ऐसा मैं नहीं सुन सकूंगी। जो मुझे करना है, वह सामली सुन भी न सकेगी। भवानी। तुमने मेरे हृदय को कैसा कर दिया मुझे बल दो कि मैं राजवंश की रक्षा में अपना रक्त दे सकूँ। अपने लाल को दे सकूँ। यह राजपूतनी का व्रत है। यह राजपूतनी की मर्यादा है। यही राजपूती का धर्म है। मेरा हृदय वज्र का बना दो। माता के हृदय के स्थान पर पत्थर बना दो जिससे ममता का स्रोत बंद हो जाए। भवानी। मैं चित्तोड़ की सच्ची नारी बनूँ। (नेपथ्य में चंदन का स्वर) माँ...माँ...माँ ...

(चंदन का प्रवेश)

चंदन : माँ। देखो मेरे पैर में चोट लग गई है। रक्त निकल रहा है।

पन्ना : कहाँ रक्त निकल रहा है? लाओ बाँध दूँ। अँगूठे मे यह चोट कैसे लगी? रक्त निकल रहा है। कितना रक्त निकल रहा है। लाओ बाँध दूँ। (अपनी साड़ी से कपड़े का टुकड़ा फाड़ती है।) पैर सीधा कर। हाँ ठीक इसे बाँध देती हूँ। (बाँधते हुए) यह चोट कैसे लगी,लाल?

चंदन : मैं जब भोजन करके उठा माँ। सज्जा ने कहा कि महल के चारो तरफ सिपाही इकट्ठे हो रहे हें। मैं देखने के लिए ऊपर के झरोखे पर चढ़ गया। कोई बात नहीं माँ। रक्त तो निकला ही करता है। पर ये सिपाही महल के चारों तरफ क्यों इक्ट्ठे हो रहे हैं ?

पन्ना : आज नाच-रंग का दिन है, न वहीं सब देखने के लिए आए होंगे या फिर सोना ने उन्हें बुलाया होगा। वह नीचे नाच रही होगी ।

चंदन : माँ सोना अच्छी लड़की नहीं है। मैं कल उससे कहूँगा माँ कि कुँअर जी को अपना नाच न दिखाया करें। उनका मन आखेट करने में नहीं लगता ।

पन्ना : मैं भी उसे समझा दूँगी चंदन।

चंदन : कुँअर जी कहाँ हैं ? माँ, आज भोजन में भी साथ नहीं मिले।

पन्ना : कहीं सो रहे होंगे।

चंदन : तब से सो रहे हैं। माँ कुँअर जी को ज्यादा नींद नहीं आती है? मैं देखूँ कहाँ सो रहे हैं ।

पन्ना : बुरा मानकर कहीं सो रहे होंगे ।

चंदन : सोना ने ही उन्हें बुरा मानना सिखला दिया माँ। नहीं तो कुँअर जी पहले कभी बुरा नहीं मानते थे। खेल-खेल में भी बुरा नहीं मानते थे। साथ खेलते थे, साथ खाते थे। आज अकेले कुछ खाया भी नहीं गया माँ।

पन्ना : तो चलो चंदन । में तुम्हें जी भर के खिला दूँ।

चंदन : अब कुँवर जी के साथ कल खाऊँगा, माँ कल हम दोनों साथ बैठेंगे। तुम प्रेम से परोस-परोसकर खिलाना। कल खूब खाऊँगा माँ। कुँअर जी से भी ज्यादा। कहते हैं कि चंदन से ज्यादा खाता हूँ। कल से यह कहना भूल जाएँगे (हँसता है) क्यों न माँ।

पन्ना : ठीक है, लाल।

चंदन : माँ! अच्छी तरह से क्यों नहीं बोलती । और तुम्हारी आँखें, तुम्हारी आँखों में पानी कैसा ? माँ! एँ तुम्हारी आँखों में ...

पन्ना : कहाँ चंदन। पानी कहाँ ? और तुम्हारे अँगूठे से रक्त की धारा बहे, मेरी आँखों में से एक बूँद पानी न निकले।

चंदन : ओह माँ तुम भी बातें करने में बड़ी अच्छी हो। जब मैं बड़ा होकर बहुत सी जागीर जीतूँगा, तो मैं तुम्हारे लिए एक मंदिर बनवाऊँगा। देवी के स्थान पर तुमको बिठलाऊँगा और तुम्हारी पूजा करूँगा। तुम अपनी पूजा करने दोगी?

पन्ना : तुझसे ऐसी आशा है चंदन । अब बहुत बातें न करो, चंदन रात अधिक हो रही है, सो जाओ ।

(कुछ आहट होती है)

चंदन : माँ... माँ... देखो उस दरवाजे से कौन झाँक रहा है?

पन्ना : कीरत बारी होगा। तुम्हारा भोजन उठाने आया होगा।

(उठकर देखती हैं)

चंदन : कोई और हो तो में अपनी तलवार लाऊँ ।

पन्ना : तो... तो... तो तुम कुँअर जी की शैय्या पर सो जाओ । शैय्या ठीक होने पर तुम्हें उस पर लिटा दूँगी।

चंदन : तुम बहुत अच्छी हो, माँ। आज कुँवरजी की शैय्या पर लेटकर देखूँ। अब तो मैं भी राजकुमार हो गया। (एकाएक स्मरण कर) पर मेरी माला। राजकुमार के गले में माला होती है न। तुमने मेरी टूटी माला गूँथ दी ?

पन्ना : नहीं गूँथ पाई लाल। सामली आ गई थी।

चंदन : कल गूँथ देना। भूलना नहीं माँ (शैय्या पर लेटा है) आहा माँ! कितनी नरम शैय्या है। जी होता है सदा इसी पर सोता रहूँ।

पन्ना : (चीखकर) चंदन।

चंदन : क्या हुआ माँ।

पन्ना : कुछ नहीं... कुछ नहीं आज मेरा जी अच्छा नहीं है।

चंदन : किसी वैद्य के यहाँ जाऊँ माँ ?

पन्ना : नहीं वैद्य के पास इसकी दवा नहीं है। वह आप-से-आप उठती है और आप-से-आप शांत हो जाती है। तुम सो जाओ... में भी कुँअर को खिलाकर जल्दी से सो जाऊँगी ।

चंदन : (चौंककर) माँ, एक काली छाया ।मेरे सिर के पास आई और उसने मुझे मारने को तलवार उठाई। माँ ... वह काली छाया, काली छाया ...

पन्ना : मैं तो तुम्हारे पास बैठी हूँ लाल। यहाँ कौन- सी काली छाया आएगी।

चंदन : कोई छाया नही आएगी माँ। पर न जाने क्यों नींद नहीं आ रही है। तुम मुझे कोई गीत सुना दो सुनते - सुनते सो जाऊँगा।

पन्ना : अच्छी बात है, मेरे लाल। में गीत ही गाऊँगी। अपने लाल को सुला दूँ।

(करूण स्वर में गीत गुनगुनाती हैं)

उड़ जा रे पंखेरुआ, साँझ पड़ी।
चार पहन बाटडली जोही
मेडयाँ खड़ी एक खड़ी।
उड़ जारे पंखेरुआ, साँझ पड़ी।
डबडब भारया नैन दिरधड़ा।
लग गई झड़ी ए
उड़ जा रे पंखेरुआ साँझ पड़ी॥
तेरी फिकर हूँ भई दिवानी,
गुसकल घटी ए घड़ी।
उड़ जारे पंखरुआ, साँझ पड़ी॥

(धीरे-धीरे गाना समाप्त होता है)

पन्ना : (फिर पुकारती है) चंदन।

पन्ना : मेरा लाल सो गया । मैंने अपने लाल को ऐसी निद्रा में सुला दिया है कि अब; नहीं उठेगा (सिसकियाँ लेती है) ओह पन्ना! तूने अपने भोले बच्चे के साथ कपट किया है। तूने अंगारों की सेज पर अपने फूल से लाल को सुला दिया है। तू सर्पिणी है, सर्पिणी जो अपने ही बच्चे को खा डालती है। जान-बूझकर अपने पुत्र की हत्या करने जा रही है। हाय। अभागिन माँ। संसार में तेरा ही जन्म होने को था। (सिसकियाँ लेती हैं फिर चंदन को संबोधित करते हुए) लाल। तुम्हारी माला मैं नहीं गूँथ सकी। तुम्हारा जीवन अधूरा होने जा रहा है और माला कैसे पूरी होगी। (सिसकियाँ) आज तुम भूखे ही रह गए मेरे लाल। आज अंतिम दिन मैं तुम्हें अपने हाथों से भोजन भी न करा सकीं। तुम क्या जानों कि तुम और कुँअर जी साथ-साथ कैसे भोजन करोगे। कहते थे कल तुम परोसकर खिलाना मैं अब कैसे खिलाऊँगी, चंदन। (सिसकियाँ) तुम्हारे अँगूठे से रक्त की धारा बही। अब हृदय से रक्त की धारा बहेगी तो में कैसे रोक सकूँगी। मेरे लाल। मेरे चंदन। जाओ यह रक्त की धारा मातृ भूमि पर चढ़ा दो। आज मैंने भी दीपदान किया है। दीपदान अपने जीवन का दान। मैंने रक्त की धारा पर तैरा दिया है, ऐसा दीपदान भी किसी ने किया है? एक बार मुख देख लूँ। कैसा सुंदर और भोला मुख है।

(सिसकियाँ लेती हैं)

(एकाएक भड़भड़ाहट की आवाज होती है। हाथ में तलवार लिए बनवीर आता है।)

बनवीर : (मद्य पीने से शब्द लड़खड़ाता है) पन्ना।

पन्ना : महाराजा बनवीर ।

बनवीर : सारे राजपूताने में एक ही माँ है पन्ना। सबसे अच्छी। मैं ऐसे धाय माँ को प्रणाम करने आया हूँ। (रुककर) ऐं। धाय माँ की आँखों में आँसू।

पन्ना : नहीं आँसू नहीं हैं। आज मेरे कुँअर बिना भोजन किए ही सो गए।

बनवीर : आज के दिन भोजन नहीं किया ? अरे आज तो उत्सव का दिन है, आनंद का दिन है, (अट्टहास करता है) मेरे महल में तीन सौ सामंतो ने भोजन किया। आज कीरत बारी की टोकरी देखती भोजन उठाते–उठाते वह जिंदगी भर के लिए थक गया होगा। (हँसता है) जिंदगी भर के लिए । तो कहाँ हैं कुँअर उदय सिंह? मैं उन्हें अपने हाथों से भोजन करा दूँ।

पन्ना : कुँअर सो गए हैं। वे किसी के हाथ से भोजन नहीं करते। मैं ही उन्हें खिला दूँगी।

बनवीर : धाय माँ हो न। पन्ना आज तुमने सोना का नाच नहीं देखा ओह। कितना अच्छा नाचती है। मैंने उससे कह दिया था कुअँर उदय सिंह को अपना नाच दिखला दे।

पन्ना : वह आई थी । शायद तुम्हीं ने उसे भेजा था। पर कुँअर जी का जी अच्छा नहीं, इसलिए मैंने उन्हें नहीं भेजा।

बनवीर : जी अच्छा नहीं था । और आज का दीपदान भी तुमने नहीं देखा ?

पन्ना : मेरे लिए दीपदान देखने की बात नहीं है करने की बात है।

बनवीर : ठीक है, धाय माँ तो मंगलकामनाओं की देवी है। वे दीपदान करके चित्तौड़ का कल्याण करेंगी। मैं भी तो चित्तौड़ का कल्याण करूँगा। एक बात और कहूँ पन्ना। मैं तुम्हें मारवाड़ में एक जागीर देना चाहता हूँ। यहाँ तुम्हारे पूजा के लिए तुलजा भवानी का मंदिर बनेगा। मंदिर । सारे लोग तुम्हें इतनी श्रद्धा से देखेंगे कि तुलजा भवानी और तुममें कोई अंतर भी न होगा। तुम्हीं देवी के उस मंदिर में रहोगी। लोग तुम्हारी पूजा करेंगे।

पन्ना : (चीखकर) बनवीर ।

बनवीर : (अट्टहास कर) महाराज बनवीर नहीं कहा। मेरे कहने भर से तुम देवी हो गई। महाराजा बनवीर को बनवीर कहने लगीं। (हँसता है) देवी को प्रणाम। देखो, अब तुम्हें मोह ममता से दूर रहना होगा। तुम कुँअर उदय सिंह को मुझको दे दोगी और मैं उसे यह तलवार दूँगा। (तलवार खींच लेता है।)

पन्ना : ऐं यह तलवार इस पर रक्त क्यों लगा है?

बनवीर : रक्त तो तलवार की शोभा है, पन्ना। यह अनंत सुहाग से भरी है। यह तो उसके सिंदूर की रेखा है, बिना रक्त के तलवार भी कभी तलवार कहला सकती है?

पन्ना : यह तलवार म्यान में रख लो, महाराज।

बनवीर : क्या तुम्हें भय लगता है? चित्तौड़ में तलवार से किसी को भय नहीं लगता। धाय माँ होने पर तुममें इतनी ममता भर गई है कि तलवार नहीं देख सकती। पन्ना तलवारें आसानी से म्यान के भीतर नहीं जाती।

पन्ना : आधी रात हो चुकी है, महाराज बनवीर । विश्राम करो ।

बनवीर : विश्राम में करूँ? बनवीर। जिसे राजलक्ष्मी पाने के लिए दूर तक यात्रा करनी है। मैं अपने साथ कुँअर उदयसिंह को भी ले जाना चाहता हूँ।

पन्ना : यह नहीं होगा... यह नहीं होगा महाराज बनवीर।

बनवीर : जागीर नहीं चाहती ?

पन्ना : नहीं।

बनवीर : तो उदयसिंह के बदले जो माँगो दिया जाएगा।

पन्ना : राजपूतानी व्यापार नहीं करती महाराज। या तो रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर।

बनवीर : दो में से किसी पर भी तुम नहीं चढ़ सकोगी। तुम्हारा महल सैनिकों से घिरा है।

पन्ना : सैनिकों को किसने आज्ञा दी ? महाराज विक्रमादित्य...

बनवीर : (बीच ही मैं), वे अब इस संसार में नही है पन्ना। उन्होंने रक्त की नदी पार कर ली है। उसी रक्त की लहर मेरे तलवार पर है।

पन्ना : ओह बनवीर! हत्यारा बनवीर!

बनवीर : महाराणा बनवीर को हत्यारा नहीं कह सकती। हत्यारा बनवीर कहने वाली जीभ काट ली जाएगी।

पन्ना : तो लो मेरी जीभ काट लो । और यहाँ से चले जाओ। महाराणा विक्रमादित्य...

बनवीर : बार-बार विक्रमादित्य का नाम क्यों लेती है ? प्रेतों और पिशाचों को वह नाम लेने दे। यदि मेरा नाम लेना है तो जयकार के साथ नाम लो।

पन्ना : धिक्कार है बनवीर । तुम्हारी माँ ने जन्म देते ही क्यों न मार डाला ।

बनवीर : चुप रह धाय । कहाँ है उदय ?

पन्ना : तू उदयसिंह को छू नहीं सकता । नीच पापी । महाराज विक्रमादित्य की हत्या के बाद तू उदयसिंह को देख भी नहीं सकता ।

बनवीर : मैं नहीं देखूँगा, मेरी तलवार देखेगी । विक्रम के रक्त से सनी हुई तलवार अब उदयसिंह के रक्त से धोई जाएगी ।

पन्ना : ओह क्रूर बनवीर। तुम तो उदयसिंह के संरक्षक थे। रक्षा के बदले क्या तुम उनकी हत्या करोगे? नहीं -नहीं यह नहीं हो सकता? यह नहीं हो सकता महाराणा बनवीर । तुम राज्य करो, चित्तौड़ पर, मेवाड़ पर, सारे राजपूताने पर राज्य करो। पर कुँअर उदयसिंह को छोड़ दो। मैं उसे लेकर सन्यासिनी हो जाऊँगी । तीर्थों में वास करूँगी। तुम्हारा मुकुट तुम्हारे सिर पर रहे,पर मेरा कुँअर भी मेरी गोद में रहे। बनवीर। महाराणा बनवीर।

बनवीर : दूर हट दासी । यह नाटक बहुत देख चुका हूँ । उदयसिंह की हत्या ही तो मेरे राजसिंहासन की सीढ़ी है। जब तक वह जीवित है तब तक सिंहासन मेरा नहीं होगा। तू मेरे सामने से हट जा।

पन्ना : मैं नहीं हटूँगी, अपने कुँअर की शैय्या से दूर नहीं हटूँगी।

बनवीर : उदयसिंह को सुला दिया । जिससे उसे मरने का कष्ट न हो उनका मुँह ढक दिया है। वाह री धाय माँ! बालक के मरने में भी ममता का ध्यान रखती है (तीव्रता से) शैय्या से दूर हट पन्ना। मैं उसे चिर निंद्रा में सुला दूँ।

पन्ना : (साहस से) नहीं, ऐसा नहीं होगा, क्रूर, नराधम, नारकी। ले मेरी कटार का प्रसाद ले (आक्रमण करती है, उसकी चोट बनवीर की ढाल पर चढ़ती है।)

बनवीर : (क्रूर अट्टहास करता है) ह ह ह ह! दासी क्षत्राणी। कर लिया कटार का वार? यह कटार मेरे हाथ में है। अब किससे वार करेगी। अब तुझे भी समाप्त कर दूँ?लेकिन स्त्री पर हाथ नहीं उठाऊँगा।

पन्ना : अबोध सोते हुए बालक पर हाथ उठाते हुए तेरा हृदय तुझे नही धिक्कारता? पापी

बनवीर : (शैय्या के समीप जाकर) आज मेरे नगर में स्त्रियों ने दीपदान किया है। मैं भी यमराज को इस दीपक का दान करूँगा। यमराज! लो इस दीपक को, यह मेरा दीपदान है। (उदय के धोखे से चंदन पर जोर से तलवार का प्रहार करता है। पन्ना जोर से चीखकर मूर्छित हो जाती है। कमरे में मंद लौ से दीपक जलता रहता है।)

अभ्यास

बोध प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. पन्ना कौन थी ?
2. चित्तौड़ में दीपदान का उत्सव क्यों मनाया जा रहा था?
3. पन्ना किसका बलिदान करती है?
4. चित्तौड़ का कुलदीपक कौन था ?
5. बनवीर कौन था ? और वह कुँअर जी को क्यों मारना चाहता था ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कीरत ने उदयसिंह की सहायता किस प्रकार की ?
2. पन्ना धाय कुँवर उदयसिंह की रक्षा क्यों करना चाहती थी?
3. उदयसिंह पन्ना धाय से रूठकर क्यों सो गया था ?
4. धाय माँ का उदयसिंह के प्रति वात्सल्य स्पष्ट कीजिए।
5. उदयसिंह के विरुद्ध रचे जाने वाले षडयंत्र का आभास पन्ना को कैसे होता है ?

दीर्घ उत्तरीयप्रश्न :

1. **निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए –**

   अ. **''चारों तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं ।''**

   ब. दिन में तुम चित्तौड़ के सूरज हो कुँवर। और रात में तुम राजवंश के दीपक हो।

2. 'लाल तुम्हारी माला मैं नहीं गूँथ सकी। तुम्हारा जीवन अधूरा होने जा रहा है तो माला कैसे पूरी होगी' इस वाक्य में छुपी करुणा को स्पष्ट कीजिए ।

3. इस एकांकी में निहित पन्ना धाय के त्याग व एकनिष्ठा के भाव का वर्णन कीजिए।

भाषा अध्ययन

1. **निम्नलिखित शब्दों में से कुछ शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है उन्हें शुद्ध कीजिए –**

   चित्तौड़, प्रस्थान, इर्ष्या, विक्रमादित्य, कुँवरजी, अन्नदाता, शैय्या, अट्ठास, राजपुतानी, शीर्षक, छत्राणी

2. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए –**

   उदय, जीवन, इच्छा, ईर्ष्या, रात

3. **एकांकी में आए शब्द सोना, जाल आदि अनेकार्थी शब्द हैं। पाठ में आए ऐसे ही अनेकार्थी शब्द छाँटकर उनके दो अर्थ लिखिए ।**

4. **निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम और तद्भव अलग-अलग करके लिखिए –**

   शैय्या, कक्ष, सूरज, रात, उदय, दासी, दीपक, प्रस्थान, पुत्र, भोजन, लता, नाच,पैर, पत्थर, सिर

योग्यता विस्तार -

1. यह धरती लाखों वर्ष पुरानी है। बहुत दिनों तक इसमें कोई आदमी न था। एक समय ऐसा था कि इस धरती पर कोई जानदार चीज न थी। आज यह दुनिया हर तरह के आदमियों और जानवरों से भरी है। एक समय ऐसा था जब धरती बहुत गर्म थी, इसलिए कोई जानदार चीज इस पर नहीं रह सकती थी। यह सब बाते हमें किताबों से मिली हैं। इसलिए हमे पुस्तकों / किताबों को मित्र बनाना चाहिए, ताकि हम अतीत की जानकारी के साथ भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकें।

   उपर्युक्त गद्यांश को ध्यान से पढ़िए इसके आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

   (अ) उपर्युक्त गद्यांश का एक उचित शीर्षक लिखिए।

   (ब) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

   (स) यह धरती कितने वर्ष पुरानी है?

   (द) हमें दुनिया की जानकारी प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

2. चंदन के मारे जाने और उदयसिंह के बच जाने का समाचार बनवीर को मिला होगा एवं उदयसिंह को भी। दोनों के मन में क्या विचार उठे होंगे ? कल्पना द्वारा इन विचारों को अलग-अलग अपने शब्दों में लिखिए।

शब्दार्थ

परिचारिका = सेविका, प्रस्थान = जाना, उद्यत = तैयार,
आत्मबलिदान = अपने आपको न्योछावर करना, शंका = सन्देह

* * *